उमेश कुमार चौरसियाःव्यक्तित्व एवं कृतित्व

बलदेव राम[1], डॉ. राजेश कुमार शर्मा[2]
[1]शोधार्थी , हिंदी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर

Umesh Kumar Chaharsiya: Personality and Works
Baldev Ram[1], Dr. Rajesh Kumar Sharma[2]
[1.]Research Scholar, Hindi Department, Bhagwant University, Ajmer
[2.]Associate Professor, Hindi Department, Bhagwant University, Ajmer

3.1 परिचय

किसी भी लेखक को समग्र रूप से समझने के लिए, उसके जीवन और व्यक्तित्व को समझना जरुरी है। एक साहित्यकार का पूरा जीवन उनकी साहित्यिक रचनाओं में बिखरा हुआ होता है । कोई भी साहित्यकार तत्कालीन परिस्थितियों के प्रभाव के बिना नहीं रहता। वास्तविकता यह है कि कलाकार के काम में उसका जीवन अनुभव झलकता है। इसलिए, एक साहित्यकार के साहित्य की पहचान उसके जीवन को समझने से हो सकती है। लेखक का व्यक्तित्व उसके साहित्य में परिलक्षित होता है और व्यक्तित्व उसके परिवार, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक वातावरण में बनता है। इसलिए, बहुमुखी समृद्ध पंचोली जी के साहित्य को समझने के लिए, उनके जीवन और व्यक्तित्व को समझना आवश्यक है।

उमेश कुमार चौरसिया की रचनाओं में आत्म–गौरव, आत्म–सम्मान, देशभक्ति और जीवन के शाश्वत मूल्यों को सम्मान देने का प्रयास किया है। जीवन का उनका दर्शन बहुत संकीर्ण नहीं है, यह बहुत विशाल है। उनके जीवन दर्शन में निराशा या भय का कोई स्थान नहीं है। उन्होंने पौराणिक और ऐतिहासिक चरित्रों का निर्माण किया है। यहां उनकी उपजाऊ रचनात्मक कल्पना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उमेश कुमार चौरसिया प्राचीन ऋषियों की तरह, वे मानव जाति के कल्याण की कामना करते हैं।

उनकी नाटकों में भारतीय आत्मा का स्वर मुखर है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उमेश कुमार चौरसिया ने हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में रचना करके हिंदी की बड़ी सेवा की है। उनका व्यक्तित्व उज्ज्वल है और उनका आभार बहुत बड़ा है। एक युग निर्माता और नाटककार के रूप में उमेश कुमार चौरसिया का अध्ययन हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में प्रेरक होगा।

3.2 व्यक्तित्व

साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने के लिए उसके जीवन वृत्त और व्यक्तित्व का अध्ययन परम आवश्यक है। जीवन की समग्रता को झलका देने वाले उस तत्त्व से है, जिसकी परिधि में मनुष्य के संपूर्ण जीवन की संचित निधि निहित है। वास्तव में मनुष्य की सबसे बड़ी पहेली उसका अपना व्यक्तित्व है। किसी मनुष्य का व्यक्तित्व एक अनुपम उलझनमय रचना विधा है जो बड़ी सतर्कता से लक्ष्य मनोभावों के आचार विचारों द्वारा एक ऐसे आदर्श में पिरोया गया है जो अपनी अनिश्चितता अथवा अस्थिरता के बावजूद भी बाह्य जगत् के आकर्षणों और विकर्षणों में संतुलन स्थापित करता है।

श्याम वर्ण, उन्नत ललाट, अत्यंत सौम्य आकृति वाले वाले व्यक्ति है और उनके चेहरे पर चश्मा उनके व्यक्तित्व को निखरता है और न ही उन्हें किसी सहारे जरूरत है । उमेश कुमार चौरसिया के व्यक्तित्व में गांभीर्य के साथ ही शिशुओं जैसी सरलता है, जिसमें छल, कपट, कृत्रिमता, दम्भ का कोई स्थान देखने को नहीं मिलता है । वे एक मानवतावादी, आशावादी और आस्थावान व्यक्ति है। परिश्रमी इतने की प्रतिदिन आठ-नौ घंटे अध्ययन लेखन में लगे रहते हैं। इतने मिलनसार है कि जो भी व्यक्ति उनसे मिलता है उसे कभी यह नहीं महसूस होने देते कि उनके पास समय नहीं है और सब के साथ प्रेम भाव से मिलते है और सभी का आदर करते है । आज के समय में ऐसा व्यक्ति मिलना संभव नहीं है द्य प्रिय मित्रों, शिष्यों और बुजर्गो के साथ भी ये अपना समय व्यतीत करते हैं। संस्मरण का तो इनके पास जैसे कोई खजाना हो । उमेश कुमार चौरसिया के व्यक्तित्व में हिमालय जैसी उच्चता, सागर जैसी गंभीरता, धरा जैसा धैर्य, जाह्नवी जैसा वेग और सुमन जैसी सुकुमारता है। उनकी वाणी इतनी मधुर है कि हर कोई उनकी तारीफ किये बिना नहीं रह सकता है। अत्यंत गंभीर विचारक, महान रचनाकार और प्रतिष्ठा से सम्पन्न होते हुए भी वे एकदम अकृत्रिम और सहज ढंग से जीवन बिताते हैं। उनकी आस्था, परदुःखकातरता, गंभीरता, सरलता उनके व्यक्तित्व को गरिमामय बना देती है।

3.3 जन्म :

हिन्दी साहित्य को निरन्तर अपनी रचनाओं से समृद्धतर बनाने में प्रयासरत उमेश कुमार चौरसिया जी का जन्म 03 सितम्बर, 1965 ई. को महाकाल की नगरी उज्जैन, मध्यप्रदेश में हुआ। आपके दादाजी स्व. श्री धूलीलाल जी चौरसिया एक कृषक थे और नानाजी श्री शिवचरण जी चौरसिया लंबे समय तक व्यवसायी रहते हुए फिर वानप्रस्थ अवस्था में उज्जैन के महाकाल मंदिर में पूजा–उपासना किया करते थे। आपके पिताजी का नाम स्व. श्री रामदयाल चौरसिया और माताजी का नाम स्व. श्रीमती कलावती जी है। आपके पिताजी जिला एवं सत्र न्यायालय अजमेर में अधीक्षक के रूप में

राजकीय सेवा में थे। वे एक प्रबुद्ध कानूनविद, आदर्शवादी, कर्तव्यपरायण, सादा जीवन उच्च विचारों वाले सत्यनिष्ठ, ईमानदार एवं गंभीर स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने ब्रिटिश कालीन अंग्रेजी माध्यम से विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी इसलिए उनकी अंग्रेजी बहुत प्रभावी हुआ करती थी, कानून का गहन अध्ययन होने के कारण कई न्यायाधीश साथी उनसे मार्गदर्शन लिया करते थे। वे सदैव कहा करते थे कि यदि ईश्वर ने आपको किसी योग्य पद के योग्य बनाया है तो यथासंभव जरूरतमंदों की सहायता करो और अपना कार्य सदैव पूर्ण ईमानदारी से करो, बेईमानी की कमाई कभी जीवन में सुख नहीं दे सकती। इसी विचार को उन्होंने सम्पूर्ण जीवन में अपनाया भी। आपकी माता सरल स्वभाव वाली, व्यावहारिक, सबसे स्नेह रखने वाली, सबकी सहायता करने को तत्पर रहने वाली एक धार्मिक प्रवृति की महिला थी। बचपन से ही माता और पिता से मिले संस्कारों ने ही उमेश कुमार चौरसिया जी के जीवन को सरल, उदार और विविध रचनात्मक कलाओं में प्रतिभावान बनाया, पिता के आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करते हुए ही श्री चौरसिया के व्यक्तित्व और कृतित्व में प्रभावी दक्षता आयी है।

3.4 शिक्षा–दीक्षा :

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा लाखन कोटड़ी अजमेर के एक छोटे से सरकारी विद्यालय में 1971 में पहली कक्षा से आरंभ हुई। आपको पाँचवी कक्षा में ही आपकी योग्यता के अनुसार विद्यालय की बालसभा के विद्यार्थी अध्यक्ष का सम्मान मिला। उसी समय आपने पहली बार मंच पर कविता की कुछ पंक्तियां पढ़ीं। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लाखन कोटड़ी में कक्षा 8 तक निर्बाध प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करते हुए कक्षा 9 में राजकीय ओसवाल जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर में वर्ष 1978 में वाणिज्य वर्ग में प्रवेश लिया और 1981 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सैकण्डरी स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। फिर 1982 में इसी बोर्ड से हायर सैकण्डरी परीक्षा भी प्रथम श्रेणी व लेखाशास्त्र विषय में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। 1983 में प्रतिष्ठित राजकीय महाविद्यालय अजमेर जिसे जीसीए कहते थे, में वाणिज्य संकाय में प्रवेश लेकर 1985 में वाणिज्य स्नातक 'बीकॉम' की उपाधि प्राप्त की। इसी दौरान आपका चयन राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा विशेष न्यायालय अजमेर में लिपिक के लिए हो गया। राजकीय सेवा आरंभ हो गई, किन्तु पढ़ने की ललक नहीं छूटी। पिताजी विधिवेत्ता थे और उन्होंने आरजेएस परीक्षा भी वरीयता से उत्तीर्ण की थी, हालांकि परिवार की देखभाल के ख्याल से वे मजिस्ट्रेट बनने का अवसर छोड़ दिया। तो पिताजी की विधि योग्यता से प्रेरित होकर श्री उमेश कुमार चौरसिया ने 1986 में विधि की पढ़ाई राजकीय महाविद्यालय अजमेर में ही चलने वाली सांयकालीन कक्षाओं में आरंभ कर दी। दिन में नौकरी और शाम को विधि कक्षा में पढ़ाई चलने लगी। 1987 में प्रथम वर्ष विधि की परीक्षा उत्तीर्ण की ही थी कि इस दौरान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा ली गई सहायक द्वितीय की प्रतियोगी परीक्षा का परिणा आया और आपका चयन इसमें हो गया। बस फिर 1987 से शिक्षा बोर्ड में सेवा आरंभ हो गयी जो वर्तमान तक चल रही है। अभी पदान्नतियां प्राप्त करते हुए सहायक अनुभाग अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। सेवाकाल में होने के कारण विधि की पढ़ाई बीच में रूक गयी। लेकिन पढ़ने की रूचि बनी हुई थी इसलिए बोर्ड अध्यक्ष से विशेष अनुमति लेकर द्वितीय वर्ष विधि की पढ़ाई पुनः आरंभ कर दी और अन्ततः सेवा में रहते हुए भी 1990 में विधि स्नातक 'एलएलबी–प्रोफेशनल' की उपाधि अजमेर विश्वविद्यालय से प्राप्त कर ही ली। 1991 में विवाह भी हो गया। नौकरी और परिवारिक दायित्व के उपरान्त भी पढ़ाई जारी ही रही और 1995 में हिन्दी साहित्य में स्नात्कोत्तर 'एमए–हिन्दी' की उपाधि स्वयंपाठी विद्यार्थी रहते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर से प्राप्त की। अध्ययन की रूचि अभी भी कम नहीं है इसीलिए तो हाल ही में 2017 में पत्रकारिता स्नातक 'बैचलर इन जर्नलिज्म' की डिग्री भी वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा से प्राप्त की है। इस प्रकार वर्तमान में उमेश कुमार चौरसिया जी वाणिज्य, विधि एवं पत्रकारिता में स्नातक और हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की योग्यता प्राप्त हैं, अर्थात उन्होंने विविध क्षेत्रों का अध्ययन कर वैविध्यपूर्ण ज्ञान अर्जित किया है। जितनी शिक्षा, अध्ययन, शोध और अनुभव श्री उमेश कुमार चौरसिया ने अर्जित किया है वह किसी प्राध्यापक की योग्यता से कमतर नहीं है, किसी पीएचडी उपाधि प्राप्त करने से भी श्रेष्ठ ही लगता है।

3.5 पारिवारिक जीवन :

उमेश कुमार चौरसिया जी का विवाह 1990 में श्रीमती अनीता चौरसिया पुत्री स्व. श्री ओमप्रकाश चौरसिया कोटा के साथ सम्पन्न हो गया। इनके एक पुत्र और एक पुत्री हैं। इनकी पुत्री पूर्वा चौरसिया ने एमबीए एचआर से स्नातकोत्तर किया है और इनके पुत्र निखिल चौरसिया ने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। आपकी धर्मपत्नि श्रीमती अनीता चौरसिया वाणिज्य में स्नातकोत्तर हैं। श्री उमेश कुमार चौरसिया ने हर परिस्थिति को देखा, भोगा और अनुभव किया, जीवन में अनेक प्रकार के संघर्ष भी आए, किन्तु परिश्रम और ईश्वर पर विश्वास रखते हुए आगे बढ़ते रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द आपके आदर्श हैं संभवतः इसीलिए विकट परिस्थितियां में भी शांत भाव से कर्मपथ पर चलते रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी ने हर कार्य में, प्रत्येक प्ररिस्थिति में पूरा–पूरा साथ दिया। संतोषी प्रवृति के चौरसिया जी ने कभी भी अधिक की अपेक्षा अथवा महत्वाकांक्षा नहीं रखी। इनके दोनों बच्चे शिक्षित और परिश्रमी है, सभी इनके ही नक्शे कदम पर चलने का प्रयास कर रहे हैं। अपने जीवन के विषय में इनकी अपनी सार्थक और सकारात्मक दृष्टि है।

3.6 लेखन की प्रेरणा :

उमेश कुमार चौरसिया जी वर्ष 1975 राजकीय उच्च प्रथमिक विद्यालय में कक्षा पाँच में पढ़ते थे। एक शनिवार को उन्हें बाल सभा का विद्यार्थी अध्यक्ष बनाया गया, तब यह शर्त हुआ करती थी कि अध्यक्ष को कुछ न कुछ सुनाना अनिवार्य है, और तो कुछ नहीं सूझा एक कविता की कुछ टूटी–फूटी पंक्तियां सुना दी, विद्यार्थियों ने खूब ताली बजाई, शिक्षकों ने भी

सराहा। बस तभी से इनकी रूचि साहित्य के प्रति बढ़ गयी। इनकी यह रूचि स्वप्रेरणा से ही थी, जिसे वे लगातार आगे बढ़ाते गए, कुछ कविताएं लिखना आरंभ हो गया। फिर 1983 में जब राजकीय महाविद्यालय में प्रवेश लिया, एक दिन तब महाविद्यालय के निकट ही स्थित नवज्योति अखबार के कार्यालय में जाकर एक कविता दे दी और छापने हेतु निवेदन किया। एक–दो दिन के बाद नवज्योति के रविवारीय अंक में कविता छप गयी और वह भी फोटो के साथ। कविता की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं–''मरता था जो अपनी आन पर, मिटता था जो देश की शान पर, वो पुत्र महान कहाँ है, पूछ रहा यह हिन्दुस्तान मेरा नौजवान कहाँ है।'' पहली कविता अखबार में छपने पर असीम खुशी हुई और उत्साहवर्द्धन भी हुआ। बाद में महाविद्यालय की पत्रिका में भी रचनाएं छपीं और लिखने का दौर चल निकला। महाविद्यालय के निकट ही न्याय अखबार का कार्यालय भी था। एक बार वहाँ भी जाना हुआ, संपादक श्रीयुत् विश्वदेव जी बड़े ही सरल स्वभाव के थे। उन्हें सभी बाबा कहते थे। उनसे परिचय हुआ, बताया कि लिखने का शौक है तो वे बोले न्याय के लिए कुछ लिखकर लाओ। यह तो सुनहरा अवसर था, तो बस तीन–चार दिनों में ही कुछ नाट्य, फिल्म और सांस्कृतिक कार्यक्रम की समीक्षाएं लिखकर ले गया। बाबा ने सराहना करते हुए मुझे कॉलम लिखने की स्वीकृति दे दी। इस प्रकार पाक्षिक कला समीक्षा का कॉलम लिखना आरंभ हो गया।

3.7 नाटक लेखन की प्रेरणा

लगभग 1984 के आस पास की बात है। तब उमेश कुमार चौरसिया जी को नाटक का नया नया शौक लगा था, एक दो नाटकों में काम भी किया था, पर संतुष्टि नहीं मिल रही थी, लगता कि नाटक विधा में अभी कुछ ठीक से सीखना चाहिए। तब फिल्मी दुनिया के मशहूर निर्देशक थे – मेहबूब। उनका अजमेर से विशेष लगाव हुआ करता था, अजमेर के ही रंगकर्मी श्री जी बैनी बतौर सह निर्देशक मेहबूब जी के साथ काम करते थे। मेहबूब जी के निधन के उपरांत फिल्मों में काम बंद हो जाने के कारण जी बैनी जी अजमेर ही आकर रहने लगे। वे यहां रेलवे टिकिट प्रिंटिंग प्रेस में काम करते थे और रेलवे बिसिट हाल में नाटक भी किया करते थे।

चौरसिया जी को किसी तरह यह पता लगा कि ऐसे बड़े कलाकार यहां हैं तो वे टिकिट प्रेस में कई बार उनसे मिलने गए, पर उन्होंने कोई खास तवज्जो नहीं दी। पर वे लगातार जाते रहे तो एक दिन उन्होंने घर आने को कहा। वहाँ उन्होंने बड़ी आत्मीयता से ढेर सारी बातें कीं, नाटक विधा पर चर्चा भी हुई। फिर उन्होंने रेलवे लोको ग्राउंड पर बने एक छोटे से मंच पर आने को कहा, वहीं पर वे रेलवे के अन्य कलाकारों साथ किसी नाटक की रिहर्सल किया करते थे। अगली ही शाम जब उमेश जी पहुँचे और नाटक सीखने की इच्छा जाहिर की तो बैनी जी ने उन्हें मंच पर झाड़ू लगाने को कहा। तीन–चार दिन वे ऐसे ही कभी झाड़ू, कभी सफाई, कभी दरी बिछाने आदि कार्य कराते रहे, उमेश जी मनपूर्वक करते रहे। तो बैनी जी ने कहा – ''तुम्हारी नाटक के प्रति लगन देखकर मैं ये कह सकता हूं कि अब तुम अच्छे कलाकार बन सकते हो, आज से तुम मेरे सहायक रहोगे।'' फिर तो इनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं, नाटक सीखने आये और सीधे ही सह निर्देशक बन गये, वो भी जी बैनी सर जैसे मंजे हुए निर्देशक के साथ। बस फिर तो नाटकों का दौर शुरू हो गया, कई नाटकों में उनका सहायक बनकर कार्य किया। ऐसे शुरू हुआ उमेश जी का नाटकों का विधिवत सफर। फिर महाराष्ट्रीयन कलाकार श्री मधुकरश्याम कुलकर्णी के साथ भी चौरसिया जी ने अनेक नाटकों में काम किया, मंच सज्जा–रूप सज्जा आदि भी सीखे। नाटक करते समय कई बार यह लगता कि नाटक के अनुरूप पात्र नहीं मिलते, विशेष तौर पर महिला पात्रों की समस्या आती या फिर नाटक की प्रस्तुति के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं हो पाते। तब मन में आया कि खुद ही नाटक क्यूं न लिखे जाएं। प्रायोगिक तौर पर कुछ एकांकी, प्रहसन आदि लिखे, कई स्कूलों में मंचित भी कराया। यह सब चलता रहा। फिर 1992 में स्वामी विवेकानन्द के संदेश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए कन्याकुमारी से एक वृहद् यात्रा 'विवेकानन्द भारत परिक्रमा' आरंभ हुई। मई 1992 में यह अजमेर में आनी थी, चूंकि चौरसिया जी नाटकों से जुड़े थे इसलिए वहाँ हुई आयोजना बैठक में कुलकर्णी जी के साथ वे भी गए। वहाँ उन्हें विवेकानन्द पर नाटक करने की एक जिम्मेदारी मिली। विवेकानन्द पर कोई उपयुक्त नाटक नहीं मिला तो खुद लिखना शुरू कर दिया और इस तरह पहला पूर्ण नाटक 'नरेन्द्र से विवेकानन्द' लिखा और उसका भव्य मंचन भी कुलकर्णी जी के निर्देशन और उमेश जी के सह निर्देशन में हुआ। खूब प्रशंसा भी मिली। बाद में इस नाटक का परिवर्धित रूप में प्रकाशित भी किया गया।

3.8 आशावादी व्यक्तित्व :

उमेश कुमार चौरसिया जी सर्वदा आशावादी है। विषम–से–विषम परिस्थितियों में निराशा के कुहासे को आशावादी सूर्य की प्रखर किरणों से नष्ट किया है। वे स्वयं तो आशावादी है ही साथ ही अपने मित्रों, शिष्यों और शुभचिंतकों को भी आशावादी बनने की प्रेरणा देते रहते हैं।

3.9 परिश्रमी व्यक्तित्व :

उमेश कुमार चौरसिया जी को अपने जीवन में, साहित्य क्षेत्र में जो इतना मान–सम्मान, पुरस्कार, अलंकरण, यश, ख्याति और कीर्ति प्राप्त हुई, वो इनके परिश्रमशील एवं धैर्यवान व्यक्तित्व के कारण ही है। गीता के श्लोक 'कर्मण्येवाधिका रस्ते मा फलेषु कदाचन' का अनुसरण करते हुए बिना फल की चिन्ता किये, बिना लाभ की आकांक्षा लिये उमेश जी निरन्तर अपना लेखनकर्म और कलाकर्म करते जा रहे हैं। सच्ची लगन और निष्ठा ही आज उनके प्रबुद्ध व्यक्तित्व में परिलक्षित होती दिखती है। योग व ध्यान का नित अभ्यास करने वाले उमेश जी आध्यात्मिक प्रतृत्ति के व्यक्ति हैं।

3.10 स्वभाव :

उमेश कुमार चौरसिया जी गंभीर स्वभाव के अत्यंत मृदुभाषी, मितभाषी और शांत प्रवृति के व्यक्ति हैं। सबसे प्रेम से मिलना, स्नेहपूर्वक बात करना और जहाँ किसी को भी सहायता की आवश्यकता हो तत्परता से सहयोग करना, ऐसा ही सहृदय स्वभाव है इनका जिससे हर कोई प्रथम संपर्क में ही प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। निरर्थक गपशप करना, द्वेषपूर्ण बातें करना, दोस्तों में बैठकर दूसरों की बुराईयां करते मजाक बनाना, ये सब तो इनसे कोसों दूर ही हैं। ऐसा न तो इनका स्वभाव है और न ही ये इसे पसंद ही करते है। जिस प्रकार उमेश जी शब्दों को तोलकर बोलते हैं उसी प्रकार वे धन खर्च भी बहुत सोच–समझकर करते हैं। मितव्ययी प्रवृत्ति के उमेश जी व्यर्थ की चीजों और अनुपयोगी वस्तुओं में धन खर्च करने के बजाय वे इससे किसी जरूरतमंद की सहायता, दान इत्यादि में देना उचित समझते हैं। इन्हें पान, सुपारी तक का भी शौक नहीं, अन्य व्यसन तो पास आएंगे भी कहां से। सिनेमा आदि देखने का भी विशेष शौक नहीं है। उमेश जी कहते भी हैं कि मुझे कोई अन्य शौक तो है नहीं इसलिए मुझे कला और साहित्य की साधना हेतु पर्याप्त समय मिल जाता है। हाँ कहीं सार्थक चर्चा हो, साहित्यिक विमर्श हो अथवा कहीं सकारात्मक विषय पर बात हो तो वे मनपूर्वक जुड़ते हैं। सर्वदा सहज और सरल रहना ही इनको भाता है।

3.11 कुशल वक्ता :

उमेश कुमार चौरसिया जी एक कुशल वक्ता भी है। भाषण देते समय वे विषय के साथ एक रूप हो जाते है। श्रोता उनके भाषण को एकाग्रचित होकर सुनते हैं, सराहते भी हैं और उस पर यथायोग्य चिन्तन भी अवश्य करते ही हैं। साहित्य, कला, संस्कृति, व्यक्तित्व विकास और पौराणिक व ऐतिहासिक गौरव इत्यादि इनकी रूचि के विषय रहते हैं। चूंकि इन्होंने स्वामी विवेकानन्द पर गहन अध्ययन और शोध किया है और स्वामी विवेकानन्द ही इनके आदर्श भी है, इसलिए इनके जीवन और संदेशों पर वे प्रभावी उद्‌बोधन देते रहते हैं। स्वामी विवेकानन्द के जीवन के संस्मरणों को तो उमेश जी इतने भावपूर्ण होकर सुनाते हैं कि सुनने वाले भी भावमग्न हो जाते हैं। हाल ही में उन्होंने श्री हनुमान जी की कथा का भी अध्ययन किया और श्रीहनुमत कथा को भी वर्तमान संदर्भ में बहुत ही रोचक ढंग से सुनाते हैं। उमेश जी कहते हैं कि ''यह सब श्री बालाजी की कृपा और स्वामी विवेकानन्द से ही प्राप्त ऊर्जा–प्रेरणा से ही संभव है, मैं तो केवल निमित्त मात्र ही हूं।''

3.12 प्रभावी मंच संचालक एवं आयोजक

उमेश कुमार चौरसिया जी सांस्कृतिक, साहित्यिक और विविध अन्य प्रतिष्ठित आयोजनों में सधा हुआ मंच संचालन भी करते हैं। अनेक राष्ट्रीय कार्यक्रमों का संचालन वे कुशलता से करते रहे हैं। साथ ही कई राज्य स्तरीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक व कला उत्सवों का आयोजन–संयोजन भी करते रहे हैं। सबको साथ लेकर चलने और टीम भावना से एकलक्षी होकर कार्य करने की प्रवृत्ति के कारण साथियों का भरपूर सहयोग इन्हें मिलता रहता है और उन्हीं की सहायता से बड़े–बड़े आयोजन भी सरलता से कर पाते हैं।

3.13 सामाजिक जीवन

साहित्य और कला की साधना के साथ–साथ उमेश कुमार चौरसिया जी सामाजिक सरोकारों के प्रति भी पूर्ण सजग होकर यथासंभव सेवा कार्य करते रहते हैं। स्थानीय तौर पर भी और कुछ राष्ट्रीय प्रकल्पों में भी वे निरन्तर आर्थिय सहयोग देते रहते हैं। विवेकानन्द केन्द्र के साथ लगभग 30 वर्ष से जुड़कर भी समाज और राष्ट्र सेवा में यथायोग्य सहभागिता का निर्वहन कर रहे हैं। जय अम्बे वृद्धाश्रम में भी सहयोगी रहते हैं।

3.14 पुरस्कार एवं उपलब्धियां:

उमेश कुमार चौरसिया जी को राजस्थान साहित्य अकादमी के प्रतिष्ठित दो पुरस्कारों से नवाजा गया है। प्रथम बच्चों के लिए उपयोगी इनकी नाट्यकृति 'विद्यालय रंगमंच के देशभक्तिपूर्ण नाटक' पर वर्ष 2011–12 में 'शंभूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार' तथा द्वितीय भी इनकी अन्य नाट्यकृति 'शौर्य प्रधान नाटक' पर वर्ष 2018–19 में 'देवीलाल सामर नाटक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। वर्ष 2005 में इन्हें भाऊराव देवरस सेवा न्यास लखनऊ द्वारा 'राष्ट्रीय युवा साहित्यकार' सम्मान से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त जिला स्तर और राज्य स्तर पर सरकारी सहित अनेकों संस्थानों द्वारा समय–समय पर सम्मानित किया जाता रहा है।

जवाहर कला केन्द्र द्वारा आपके लिखे बाल एकांकी 'नन्हीं हवा' को वर्ष 2008 में 'राजस्थान राज्य में सर्वश्रेष्ठ बाल एकांकी' का सम्मान दिया गया। हिन्दी नाटक 'टूटता भ्रम' और 'कुन्ती की व्यथा' को भी जवाहर कला केन्द्र ने राज्य स्तर पर श्रेष्ठ नाटकों के लिए क्रमशः वर्ष 1996 व 1998 में पुरस्कृत किया तथा राजस्थानी नाटक 'सिराध रो दिन' और 'म्हूं तो भूलग्यो' को भी वर्ष 2004 व 2014 में राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया गया। राजस्थानी हास्यप्रद नाटक 'म्हूं तो भूलग्यो' के देशभर में अब तक 100 से अधिक प्रदर्शन विविध मंचों पर किये जा चुके हैं और इसका प्रसारण आकाशवाणी व दूरदर्शन पर भी हुआ है। आकाशवाणी पर उमेश जी के अनेक नाटकों का प्रसारण समय–समय पर होता रहता है। आकाशवाणी व दूरदर्शन से आपकी अनेक राजस्थानी व हिन्दी वार्ताएं, कहानी पाठ, कविता पाठ, पुस्तक चर्चा एवं साक्षात्कार प्रसारित होते रहे हैं।

विवेकानन्द के बाल जीवन को उकेरते एनबीटी से प्रकाशित रोचक बाल नाटक 'मेधावी नरेन्द्र को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध अनेक पब्लिक विद्यालयों की मिडिल कक्षाओं में पाठ्यक्रम में शामिल कर पढाया जा रहा है और 'नरेन्द्र से विवेकानन्द' नाटक केन्द्रिय विश्वविद्यालय के हिन्दी स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जा रहा है।

3.15 कृतित्व :

उमेश कुमार चौरसिया जी का व्यक्तित्व जितना बहुआयामी, सहज, सरल और शांत है, कृतित्व उतना ही व्यापक और विशाल द्य उनका एक पृष्ठ रोज लिखने का नियम है जो 1953 से आज तक अनवरत रूप से चला आ रहा है। सबसे खास बात उनके लेखन की जो उन्हें एक साहित्यिक पुरुष घोषित करती है, वह है उनका अव्यवसायिक लेखन क्रम द्य वेद आधारित जीवन दृष्टि को लेकर चलने वाले उमेश कुमार चौरसिया जी हिंदी की गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अपनी कलम चलाने के लिए सिद्धहस्त है, परंतु उन्हें ख्याति मिली है अपने सांस्कृतिक चेतना सम्पन्न नाटकों, वेद–लोक चेतना से संपृक्त निबंधों और शब्द चिंतन के मौलिक लेखन से।

इनके नाटककार हृदय से 'ध्रुवश्री', 'उत्सर्ग', 'नींव के स्वर', और 'सुनहरे सपनों के अंकुर', जैसे सुंदर मंचोपयुक्त नाटक हिंदी संसार को प्राप्त हुए हैं। इनके एकांकीकार मन ने 'धर्ममाता', धूलिवंदना' तथा 'बंदे एक राम के' जैसे बहुप्रशंसित एकांकी संग्रह रचकर हिंदी एकांकी को गौरवान्वित किया है। इनके नाटकों में शारदीय ज्योत्स्ना की आनंदप्रदायिनी शीतल अमृत वर्षा है।

प्रथम कृति

उमेश कुमार चौरसिया जी की प्रथम कृति के प्रकाशन का भी बड़ा रोचक और प्रेरक प्रसंग है, जो यह दर्शाता है कि धैर्य, निष्ठा और सदिच्छा से किये कार्य का परिणाम अन्ततः श्रेष्ठ ही आता है। वे बताते हैं कि ''नाटक करते समय कई बार हमें यह कठिनाई आती कि आवश्यक पात्र हमें नहीं मिलते, महिला पात्रों को लेकर विशेष समस्या रहती। कुछ कथानक अनुकूल नहीं लगते कुछ की प्रस्तुति अत्यंत खर्चीली होने के कारण हमारे बस की नहीं होती। तब मन में विचार आया कि हमें अपने अनुसार नाटक खुद ही लिखने चाहिए। इस तरह नाटक लिखने का दौर चला, कुछ हिन्दी लघु नाटक, झलकियां आदि लिखे। उन दिनों मैंने **राजस्थानी लोक कथाओं का** खूब अध्ययन किया था तो लगा कि इन कथाओं को लेकर भी रोचक नाटक लिखे जा सकते हैं। इस काम में जुट गया, और राजस्थानी में ही पाँच हास्यप्रधान नाटक लिख दिये। अब ये अच्छे लिखे गए हैं कि नहीं यह कौन बताए, तो मैं राजस्थानी के प्रसिद्ध अध्येता डॉ चन्द्रप्रकाश जी देवल के पास गया। उन्होंने पहले तो मुझे कुछ दिन टरकाया, फिर एक दिन घर बुलाया। वहाँ मैंने नाटक दिखाए तो कहा–**छोड़ जाओ देखकर बताऊँगा, वैसे राजस्थानी में लिखना कोई आसान काम नहीं है।'** मैं नाटक पाण्डुलिपि छोडकर आ गया। करीब 5 दिन बाद उनके पास गया तो वे खुश होकर बोले–''तुमने तो अच्छे नाटक लिख दिये हैं, भाषा भी सरल है और कथानक भी रोचक है।' पाण्डुलिपि पर उन्होंने कुछ गोले बनाये थे उनको दिखाकर कहने लगे–''ये शब्द बदल देना और कुछ सुधार कर लेना फिर ये परफैक्ट हो जाएंगे। सुधार के बाद मैं श्रद्धेय डॉ बद्रीप्रसाद जी पंचोली जी के पास गया। उन्होंने नाटक पढ़कर कहा कि अच्छे हैं, इनको राजस्थानी भाषा साहित्य अकादमी बीकानेर को भेज देना। मैं नया नया लेखक और अकादमी का नाम सुनकर अचंभित हुआ। हँसकर बोला–मैं कहाँ अकादमी के लायक।' फिर भी उन्होंने कहा कि मेरे कहने से एक बार भेज देना।' मैंने भेज दिये और भूल गया। कोई आशा थी ही नहीं। लगभग 6–7 माह बाद अकादमी से पत्र आया कि पाण्डुलिपि स्वीकृत हो गयी है और मुद्रित करवाकर अकादमी को प्रतियां भेजने पर 5000रू की सहयोग राशि दी जाएगी। मैं तो प्रसन्नता से उछल पड़ा। पहली ही कृति और अकादमी से, इससे बढ़िया बात और क्या हो सकती थी मेरे जैसे नये साधक के लिए। ..पर समस्या ये कि इसे छापेगा कौन वो भी बिना अग्रिम राशि लिये। वापस पंचोली जी के पास गया तो उन्होंने कहा मैं छापूंगा। और उन्होंने बिना पैसे लिए उनके अर्चना प्रकाशन से राजस्थानी एकांकी संग्रह 'सिराध रो दिन' छाप दिया। यह वर्ष 1992 की बात है। बाद में अकादमी से राशि मिलने पर मैंने उन्हें जबरन दिये।''

इस प्रकार उमेश कुमार चौरसिया जी की प्रथम कृति राजस्थानी एकांकी संग्रह 'सिराध रो दिन' का प्रकाशन राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी द्वारा श्रद्धेय डॉ बद्रीप्रसाद पंचोली जी के अमूल्य सहयोग से हुआ। साहित्य और वेदों के शिखर पुरूष डॉ पंचोली जी का मार्गदर्शन उमेश जी को सदैव से ही मिलता रहा है।

नाट्य विशेषज्ञ एवं प्रशिक्षक

उमेश कुमार चौरसिया जी की छवि देशभर में नाट्य विशेषज्ञ एवं प्रशिक्षक के रूप में बनी हुई है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् 'एनसीईआरटी' नयी दिल्ली द्वारा क्षैत्रीय शिक्षा संस्थान 'आरआईई' में एमएड एव बीएड के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए आयोजित होने वाली 'कला एवं सौंदर्य शिक्षा आधारित कार्यशालाओं' में 'शिक्षा में नाट्यविधा के प्रयोग' पर प्रशिक्षण हेतु विगत दस वर्षों से संदर्भ व्यक्ति के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। इसी विषय पर विद्यार्थियों व शिक्षकों का मार्गदर्शन करने वाली एक शैक्षिक पुस्तक ' कला एवं सौंदर्यबोध षिक्षा :नवाचार और अनुप्रयोग' का सह लेखन भी आपने किया है। इसके अतिरिक्त संगीत नाटक अकादमी सहित अन्य प्रतिष्ठित कला संस्थानों के माध्यम से युवा एवं बच्चों के लिए आयोजित नाट्य शिविरों में नाट्यविधा का प्रशिक्षण विगत 27 वर्ष से दे रहे हैं। 'नाट्यवृंद' संस्था के निदेशक होने के नाते उमेश जी प्रति वर्ष 'युवा अभिनय कार्यशाला' का आयोजन भी निःशुल्क करते हैं। नाट्यविधा के माध्यम से युवा और बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते हुए उनमें संस्कार व संस्कृति का बोध हो, इसी ध्येय से उमेश कुमार चौरसिया जी नाट्य विधा के प्रसार और संवर्द्धन में जुटे हुए हैं। इसीलिए उनकी अधिकांश कार्यशालाएं निःशुल्क ही होती हैं। उमेश जी ने आचार्य भरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र का भी विस्तार से अध्ययन व शोध भी किया है। नुक्कड़ नाटकों में भी आपको विशेषज्ञता प्राप्त है। शैक्षिक रंगमंच और बाल रंगमंच पर विस्तृत शोध और लगभग 18 वर्षों से निरन्तर कार्य के कारण ही चौरसिया जी की प्रतिष्ठा शैक्षिक एवं बाल रंगमंच विशेषज्ञ के रूप में भी है।

फिल्मकार

श्री उमेश कुमार चौरसिया ने लघु फिल्मों के निर्माण, लेखन व निर्देशन के क्षेत्र में भी कार्य किया है। इनके द्वारा निर्मित विद्यालय में स्वच्छता पर आधारित 'भोजनावकाश', शहर की सफाई के लिए 'सड़क पर' और बुजुर्गों के लिए प्रेमपूर्ण व्यवहार को दर्शाती 'बूढ़ी काकी' जैसी नागरिक कर्तव्यों के प्रति सावचेत करने वाली लघु फिल्मों को न केवल प्रशासनिक तौर पर स्थान–स्थान पर प्रदर्शित किया गया वरन् इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर भी एनसीईआरटी आदि संस्थानों द्वारा सराहा गया। आपके द्वारा लिखित व निर्देशित शैक्षिक ऑडियो नाट्य कार्यक्रमों 'गंगा की पुकार' और 'चीं चीं चिड़िया' को भी एनसीईआरटी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ नाट्य कार्यक्रम का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

सिद्धहस्त बाल साहित्यकार एवं नाटककार :

श्री उमेश कुमार चौरसिया का सम्पूर्ण साहित्यिक परिदृश्य देखें तो आपको देशभर में प्रमुख तौर पर नाटककार और बाल साहित्यकार के रूप में ही पहचान मिली है। श्री उमेश कुमार चौरसिया का सम्पूर्ण साहित्य नवांकुरों के लिए और जनहितार्थ समर्पित है। जिसका अनुशीलन कर युवमन अपने अस्तित्व को संरक्षित और संवर्धित करते हुए समाज और राष्ट्र के लिए नवआयाम स्थापित करने में समर्थ हो सकते हैं। चौरसिया जी की रचनाओं में भारतीय जनमानस के नायक के रूप में प्रतिष्ठापित ऐतिहासिक पात्रों का जीवंत दर्शन भारत की प्राचीन धरोहर को संजोने हेतु वर्णित है। इनके बाल नाटक जहाँ राष्ट्रभाव को जगाते हैं वहीं पर्यावरण के प्रति प्रेम भी दर्शाते हैं। एक साहित्यकार की रचनाधर्मिता तभी सार्थक है जब वह समाज के लिए, राष्ट्र के लिए कुछ सार्थक कर पाए। बाल मनोविज्ञान को समझते हुए इनका साहित्य जहाँ उनमें राष्ट्रभक्ति और देशप्रेम के भाव भरता है वहीं युवमन को औदात्य से जोड़कर उनके जीवन को दिशा नाविन्य देने का भी महनीय कार्य करते हैं। उमेश जी द्वारा रचित नाटक तथा एकांकी विषयवस्तु और काव्य–कलात्मक तत्त्वों की दृष्टि से बालमन हितार्थ ही लिखे गए हैं। इनके द्वारा रचित एकांकियों एवं लघुनाटकों के शीर्षक जब हम बाल मन की दृष्टि से देखते हैं तो वे अत्यन्त रोचक और आकर्षक नजर आते हैं।

उमेश चौरसिया जी का नाटक और एकांकियों को जीवंतता से प्रस्तुत करने के पीछे उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण है। चूँकि वे एक रंगकर्मी भी हैं, लगभग 30–32 वर्षों से नाटकों में अभिनय और निर्देशन भी कर रहे हैं, इसलिए उनके नाट्य लेखन में भी जीवंतता और अनुभवसिद्धता स्वतः ही प्रकट होती है। भाषा–प्रवाहमयता एवं शिल्प–सौष्ठव इनके साहित्य की अद्वितीय विशेषता है, इसीलिए आपकी भाषा भावों की अनुगामिनी प्रतीत होती है। प्रत्येक नाटक मंचीय प्रस्तुति के लिए पूर्ण प्रभाव लिए दिखता है। वे कहते भी हैं कि, ''मैं नाटक लिखने से पहले उसका दृश्यांकन मानस पटल पर करता हूँ। इस प्रक्रिया में नाटक मंच पर कैसा लगेगा इसका ठीक आंकलन संभव हो पाता है। फिर नाटक लिखे जाने के उपरांत मेरा पहला प्रयास रहता है कि उसका एक मंचन कहीं न कहीं हो जाये। इस प्रक्रिया में तथा मंचन के उपरांत नाटक में कई बार आवश्यक संशोधन, परिवर्धन का कार्य भी होता रहता है। तब कहीं कोई नाटक अपना पूर्ण स्वरुप लेता है।'' संभवतः इसीलिए उमेश जी के अधिकांश नाटकों के मंचन देशभर में अनेक रंगमंचों पर सहजता और सफलता पूर्वक होते रहे हैं। इनके रचित नाटक और झलकियाँ आकाशवाणी और दूरदर्शन से भी लगातार प्रसारित हो रहे हैं।

उमेश कुमार चौरसिया जी का जितना अधिकार हिंदी पर है उतना ही मायड भाषा राजस्थानी पर भी है। हिन्दी भाषा में इनकी रचनाएं जितनी रोचक एवं भावपूर्ण होती हैं, राजस्थानी में भी मायड़ भाषा का लावण्य और रस लिये हुए होती हैं, और इसीलिए इनके द्वारा लिखे गए दोनों ही भाषाओं के नाटक व बाल साहित्य देशभर में अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं। स्वामी विवेकानंद का प्रभाव उमेशजी के जीवन पर बचपन से ही रहा है। इसीलिए उनके लेखन में भी विवेकानंद प्रमुखता से उभरते हैं। विवेकानन्द पर नाटक भी लिखे और उनके प्रसंगों, कथाओं तथा व्याख्यानों को विषयबद्ध करते हुए संपादित कृतियां भी प्रकाशित हुई हैं। साथ ही महात्मा गाँधी को भी उमेश कुमार चौरसिया जी ने बड़ी गहनता से पढ़ा और समझा है। इसीलिए वे गांधी जी के बच्चों के लिए उपयोगी जीवन प्रसंगो पर संपादित कृति भी लिख पाये हैं और उनके संदेशों की प्रेरणा देने वाले सरस नाटक भी रच दिये हैं। एक बाल नाटक 'मेधावी नरेन्द्र' को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास 'एनबीटी' ने प्रकाशित किया है और बाल कहानी संग्रह 'सबसे न्यारा गोलू' भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से शीघ्र प्रकाश्य है। प्रसिद्ध कथाकार प्रेमचन्द और गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की लोकप्रिय बाल कथाओं का नाट्य रूपान्तर भी आपने किया है और इनका प्रकाशन भी हुआ है, जिसे देशभर में खूब सराहा गया है।

यदि मनुष्य अपने दैनन्दिन जीवन में इस निष्काम कर्म की महत्ता समझ लें तो निश्चय ही यह धरा स्वर्ग होकर दैवीय गुणों से सम्पन्न हो जाएगी। वैश्वीकरण के युग ने मानव–मानव के प्रति स्पर्धा के भावों को प्रधानता दी है। विज्ञान और तकनीक का यह युग मनुष्य की बुद्धिलब्धि को महत्त्वपूर्ण बताता है बल्कि भावनात्मक लब्धि मनुष्य को श्रेष्ठ और सफल बनाती है। हमारी संस्कृति भावनात्मक लब्धि को महत्त्वपूर्ण बताती है और हमारा आध्यात्मिक साहित्य व संस्कृति इस हेतु उपयुक्त खाद देती है। श्री उमेश कुमार चौरसिया की सर्जन साधना भी इसी दृष्टि से प्रभावित लगती है। इनका समूचा साहित्य प्रेरक साहित्य है जो यह आह्वान करता है कि काम केवल काम और योजनाबद्ध तरीके से तथा मानव हितार्थ एवं उच्च जीवन मूल्यों से प्रेरक कार्य भावी पीढ़ी के हित में, देश और राष्ट्र हित में सहायक हो सकता है। उनके नाटक जहाँ राष्ट्रभाव को जगाते हैं वहीं मातृभूमि के प्रति त्याग के लिए भी प्रेरित करते हैं। बच्चों की रूचि, समझ और क्षमता के अनुकूल रचित इन नाटकों को मंचित करना रूचिकर तो है ही, वहीं इन्हें देखने वाले बच्चों को मनोरंजन के साथ–साथ श्रेष्ठ बनने की प्रेरणा भी मिलेगी ही।

नाटक और बाल साहित्य में इनकी प्रमुख कृतियां सिराध रो दिन, गोलू बंदर, चीं चीं चिड़िया, ऐतिहासिक बाल एकांकी, विद्यालय रंगमंच के देशभक्तिपूर्ण नाटक, बापू की बालपोथी, अतिथि देवो भव, पड़ोसन, नरेन्द्र से विवेकानन्द, मेधावी नरेन्द्र, सूर्यपुत्र कर्ण, शौर्यप्रधान नाटक, इदं राष्ट्राय, विद्यालयी बाल नाटक, गुल्ली डंडा, सुख से दुखी और राम कबीरा एक है आदि हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के बाल नाटकों का सरल हिन्दी में रूपान्तर करते हुए संकलन रवीन्द्र नाथ ठाकुर के बाल नाटक भी प्रकाशित हुआ है। दो बाल उपन्यासों की रचना भी आपने की है। स्वामी विवेकानन्द के जीवन को उकेरता 'मैं विवेकानन्द हूँ' और रामायण के प्रभावी पात्र हनुमान के चरित्र की विशेषताओं को रोचकता से प्रस्तुत करता 'हनुमान' ये दोनों उपन्यास ही प्रकाशित होने के साथ ही लोकप्रिय हुए और देशभर में पढ़े जा रहे हैं।

अन्य साहित्यिक विधाओं में भी लेखन

उमेश कुमार चौरसिया जी नाटक और बाल साहित्य पर प्रमुखतः लेखन करते हुए साहित्य की अन्य विधाओं लघुकथा, कविता, गीत, हिन्दी गज़ल, आलोचना व समीक्षा, स्तम्भ, फीचर और सामयिक आलेख भी लिखते रहे हैं। न्याय, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका आदि समाचार पत्रों में इनके लिखे स्तंभ बहुत लोकप्रिय रहे हैं। राजस्थानी व हिन्दी की लघुकथाएं व काव्य रचनाएं निरन्तर अनेक प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। समय–समय पर ऐतिहासिक गौरव और संस्कृति संबंधि विषयों पर आधारित फीचर व सामयिक आलेख भी छपते रहते हैं। अजमेर के सांस्कृतिक व ऐतिहासिक गौरव को दर्शाने वाला गीत 'अजमेर पे हमको नाज है' को बड़ा पसन्द किया गया और इसीलिए रेल्वे प्रशासन ने इस गीत को अजमेर रेल्वे स्टेशन पर यात्रियों के स्वागत द्वार के निकट प्रदर्शित भी किया है।

जीवनीकार :

जैसा कि हमने जाना ही है कि उमेश कुमार चौरसिया की रूचि पौराणिक, ऐतिहासिक विषयों के साथ महापुरूषों की जीवन गाथा के प्रेरणादायी प्रसंगों को अपने लेखन विधा के माध्यम से उकेरने की रहती है। इसीलिए इन्होंने कुछ प्रेरक जीवनियां भी लिखी हैं। इनके द्वारा लिखित जीवनियों की विशेषता यह है कि वे भी एक कहानी की तरह रोचक और रसपूर्ण लगती हैं। बच्चे हों, युवा हों या प्रोढ़ वय के पाठक हों सभी को वे रूचिकर लगती हैं। इसमें इनकी कृतियां निवेदिता एक समर्पित जीवन और प्रेरणा दीप प्रमुख हैं।

कुशल संपादक

उमेश कुमार चौरसिया जितने कुशल लेखक–रचनाकार हैं उतने ही सक्षम संपादक भी हैं। आपने कई विषयों की पुस्तकों का संपादन किया है और दो पत्रिकाओं के संपादन से भी जुड़े रहे हैं। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की पत्रिका 'राजस्थान बोड़ शिक्षण पत्रिका' के संपादक सहयोगी के रूप में लगभग 10 वर्ष कार्य किया है तथा विवेकानन्द केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'केन्द्र भारती' के सह संपादक के रूप में भी पाँच वर्ष तक मानद सेवाएं अर्पित की हैं। आपने महात्मा गांधी के विविध आलेखों, प्रवचनों, संदेशों का संकलन 'मेरी युवा दृष्टि–गांधी', मंगल प्रभात, बच्चों के प्रेरक बापू के साथ–साथ स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यान, संदेशों को संकलित करते हुए 'उज्जवल भारत का भविष्य –विवेकानन्द', विवेकानन्द की कथाएं, धर्म–स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में आदि संपादित की हैं।

स्वरचित नाटक/एकांकी

84 हिन्दी एवं 18 राजस्थानी

हिन्दी भाषा में:–

1. विविध नाट्य संग्रहों में प्रकाशित

1. नरेन्द्र से विवेकानन्द
2. मेघावी नरेन्द्र
3. कर्त्तव्य पथ
4. कुन्ती की व्यथा
5. टूटता भ्रम
6. मत चूके चौहान
7. वीरांगना पन्नाधाय
8. खूब लड़ी मर्दानी
9. दाहरसेन का बलिदान
10. आउवा तुझे प्रणाम
11. इदं राष्ट्राय
12. अलटू–पलटू चूहे
13. बोतल का जिन
14. धूर्त चिंपू लोमड़ी
15. चंदा मामा दूर के
16. पेड़ की सुनो
17. कथा गधे की

18. नन्हीं हवा
19. बाल–मन
20. आजाद की शहादत
21. कुंभा का बलिदान
22. सच्चाई
23. स्वप्न
24. वीर दुद्धा
25. देशभक्त पुत्त
26. वीर मालोजी
27. मातृभक्त बालक
28. गोलू बंदर
29. चीं–चीं चिड़िया
30. गाय
31. टेलीफोन
32. रेडियो
33. दर्जी
34. असली सुगंध
35. सत्य का अपहरण
36. बापू कहिन
37. क्रांतिवीर प्रतापसिंह बारहठ
38. फँस गए लालच में
39. आदमी
40. मेरा भारत
41. गाँधी की सीख
42. अच्छा इंसान कौन
43. बापू की बाल पोथी
44. अतिथि देवो भव
45. सिल्वर जुबली
46. सुखी दाम्पत्य का हुनर
47. श्राद्ध का दिन
48. मैं तो भूल गया
49. पड़ोसन प्रेम का मूल्य घूंघट (रवीन्द्रनाथ टैगोर की कथा पर)
50. (रवीन्द्रनाथ टैगोर की कथा पर)
51. (रवीन्द्रनाथ टैगोर की कथा पर)
52. (रवीन्द्रनाथ टैगोर की कथा पर)
53. युगप्रेरक विवेकानन्द
54. मेरी पाती सफाई मेरा काम
55. एक कहानी
56. तीन बंदर
57. महाराज का चित्र
58. गोपाल की देशभक्ति
59. निडर चन्द्रशेखर
60. स्वाभिमानी सुभाष
61. नादानी (प्रेमचंन्द की कथा पर)
62. गुल्ली डण्डा (प्रेमचंन्द की कथा पर)
63. अपना घर (प्रेमचंन्द की कथा पर)
64. ईद का मेला (प्रेमचंन्द की कथा पर)
65. बड़े भाई साहब (प्रेमचंन्द की कथा पर)
66. राम कबीरा एक है

2. शीघ्र प्रकाश्य

1. गंगा की पुकार

2. आओ हे कृष्ण
3. आजादी की कहानी
4. दानवीर भामाशाह
5. वीरांगना झलकारी बाई
6. सावरकर बोलता है
7. जिन्दगी धुँआ ना हो जाए
8. क्या करे भगवान
9. मनमौजी राजा
10. नव भारत निर्माण करेंगे
11. अब तो समझो
12. सुनो रे भाई
13. स्वच्छता
14. जल ही जीवन (शैक्षणिक)
15. नादान दोस्त(शैक्षणिक)
16. टिकिट एलबम(शैक्षणिक)
17. समानता का व्यवहार(शैक्षणिक)
18. परमाणु को जानो(शैक्षणिक)

राजस्थानी भाषा मेः–

1. विविध नाट्य संग्रहों में प्रकाशित

1. सूर्यपुत्र कर्ण
2. सिराध रो दिन
3. खीचड़ी रे खीचड़ी
4. बामण री सीख
5. चलाक चौधरण
6. म्हूँतो भूलग्यो
7. सुख सै दुःखी
8. ऊपरळौ जाणै
9. कांबळा रो हिस्सौ
10. दो ठग
11. दस का नौ
12. होस्यार सेठाणी
13. चाकर मालिक रा
14. चोर आळी चिड़ी
15. शेखचिल्ली रो घर
16. खरगोस री गवाही
17. निन्नाणू री झाट
18. पाणी रो मोल (शीघ्र पकाश्य)

उमेश कुमार चौरसिया (रंगकर्मी व साहित्यकार)

पुरस्कार, सम्मान व अन्य उपलब्धियाँ :

1. राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा 2011–12 में राज्य स्तरीय 'षंभूदयाल सक्सेना बाल साहित्यकार पुरस्कार' एवं 2018 में नाटकविधा का 'देवीलाल सामर पुरस्कार', भाऊराव देवरस सेवा न्यास लखनऊ द्वारा 2005 में रंगमंच व नाट्य विधा हेतु अखिल भारतीय 'युवा साहित्यकार सम्मान'

2. एनसीईआरटी नई दिल्ली की उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए 'विज्ञान को खेल व कला विधाओं के माध्यम से समझने' हेतु हैण्डबुक तैयार करने वाली समिति में 2015–16 में तथा 'राजस्थान सरकार द्वारा नैतिक षिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास' संबंधी प्रस्ताव हेतु गठित समिति में 2014–15 में सदस्य के रूप में कार्य।

3. छः लघु फिल्मों (ीवतज थ्पसउे) तथा चार शैक्षिक ऑडियो/वीडियो प्रोग्राम का लेखन, निर्देषन व निर्माण। स्वच्छता पर बनाई लघु फिल्म 'भोजनावकाष (Recess Time)' 2017 में राष्ट्रीय स्तर पर एनसीईआरटी द्वारा चयनित।

4. एनसीईआरटी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय बाल शैक्षिक श्रव्य–दृष्य उत्सव के तहत 'गंगा की पुकार' को 2018 तथा 'चीं चीं चिड़िया' को 2020 में सर्वश्रेष्ठ नाट्य कृति का पुरस्कार। नाटक 'नन्हीं हवा' 2008 में राजस्थान राज्य में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत। राजस्थानी नाटक 'सिराध रो दिन' व 'म्हूं तो भूलगो' तथा दो हिन्दी नाटक 'टूटता–भ्रम' व 'कुन्ती की व्यथा' 1996, 1998, 2004 व 2014 में राजस्थान राज्य स्तर पर पुरस्कृत। म्हूं तो भूलगो' के सर्वाधिक 75 से अधिक प्रदर्षन।

4.. 82 हिन्दी व 27 राजस्थानी भाषा के पूर्णकालिक, लघु व नुक्कड़ नाटकों का लेखन, अधिकांष बालनाटक। 34 वर्षों से लगातार रंगकर्म। 65 से अधिक पूर्णकालिक, लघु व नुक्कड़ नाटकों का निर्देषन। 19 वर्षों से 'बाल–रंगमंच (बिपसकतमद जीमंजतम)' एवं 'षिक्षा में रंगकर्म (जीमंजतम प्द म्कनबंजपवद)' के प्रति समर्पित।

5 एनसीईआरटी, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की राज्य व राष्ट्रीय कार्यषालाओं में 2012 से लगातार नाट्य प्रषिक्षण व निर्देषन। क्षेत्रिय षिक्षण संस्थान में एनसीईआरटी योजनान्तर्गत बीएड व एमएड विद्यार्थियों हेतु आयोजित 'कला एवं सौंदर्यबोध षिक्षा' आधारित कार्यषालाओं में 2014 से नाट्य प्रषिक्षण, राजस्थान साहित्य अकादमी व अन्य संस्थानों के साथ 2007 से 01 वैष्विक, 5 राष्ट्रीय, 8 राज्य स्तरीय व अनेक स्थानीय साहित्यिक कार्यक्रमों का संयोजन व संचालन।

संदर्भ

[1]. सामर, देवीलाल, राजस्थानी लोकनाट्य, भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर, 1957, पृ.स.1
[2]. भल्ला, एल.आर., सामयिक राजस्थान, कुलदीप पब्लिकेशनस, जयपुर, 1085 2008, पृ.स.485
[3]. समर, देवी लाल, कठपुतली नाटक कला और समस्याएं, वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय, दिल्ली, पृ.स. 4
[4]. उपाध्याय, विभाष, छायानट, उत्तरप्रदेश संगीत नाटक, अकादमी, लखनऊ, पृ.स. 51
[5]. मधुर, शिवकुमार, भारत के लोकनाट्य , वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1980, पृ.स. 32
[6]. भानावत, महेंद्र राजस्थान संगीत नाट्क अकादमी, जोधपुर, पृ.स. 65
[7]. मेहता, ज्ञानवती वैद, लोकनाट्यों में संगीत, विकास प्रकाशन बीकानेर, 2003 पृ.स.38
[8]. राजहंस, सुधा, लोकनाटय, नये सन्दर्भ, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर पृ.स.55
[9]. मेहता, ज्ञानावती बैद, लोकनाट्यों मे संगीत, विकास प्रकाशन, बीकानेर, 2003, पृ.स. 39
[10]. राजहंस, सुधा, लोकनाट्य नये सन्दर्भ, विकास, प्रकाशन, बीकानेर, पृ.स. 31
[11]. मेहता, ज्ञानवती बैद, लोकनाट्यों में संगीत, विकास प्रकाशन, बीकानेर 2003, पृ.स. 39
[12]. राजहसं, सुधा, लोकनाट्य, नये सन्दर्भ, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर पृ.स. 34
[13]. भटनागर, धर्मेन्द्र, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ, किरण प्रकाशन, जयपुर, 2004, पृ.स. 641
[14]. राजहंस, सुधा, लोकनाट्य , नये सन्दर्भ, विकास प्रकाशन, राजस्थान संगी नाटक अकादमी, जोधपुर, पृ.सं. 68
[15]. भटनागर, धर्मेन्द्र, वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ, किरण प्रकाशन, जयपुर, 2004, पृ.स. 641